Theory of Socio-Cultural Development

सामाजिक-सांस्कृतिक विकास का सिद्धांत

- By Lev Vygotsky

Contemporary to Jean Piaget **(1896 – 1980)** of Switzerland, Lev Vygotsky **(1896 – 1934)** of Russia, also gave Theory of **Cognitive Development**. But this theory stresses the fundamental **role of social interaction** in the development of cognition.
Unlike **Piaget's** notion that children's **Development** must necessarily precede their **Learning**, **Vygotsky** argued, that **Social Interaction** tends to precede (i.e. come before) **Development**.

Social Interaction —(Vygotsky)→ Development —(Piaget)→ Learning

Vygotsky's theory differs from that of Piaget in following aspects -
1. Vygotsky laid **more emphasis on Culture** and **Social Factors** affecting cognitive development. This contradicts **Piaget's** view of **Universal Stages**.
2. Vygotsky laid more emphasis on the **role of language** in cognitive development. According to **Piaget**, **language depends on the thought** for its development i.e., thought comes before language. For **Vygotsky**, thought and language are initially separate systems from the beginning of life, merging at around **three years** of age, producing verbal thought.
3. According to Vygotsky **adults** are an important **source** of cognitive development. Adults transmit their **Cultural Tools** to the children. The tools of intellectual adaptation vary from culture to culture.

Some Concepts of Vygotsky

More Knowledgeable Other (MKO)
Someone who has a better understanding or a higher ability level than the learner, with

Lev Vygotsky
1896 - 1934

स्विटरजलैंड के जीन पियाजे (1896 – 1980) के ही समकालीन रूस के लेव वाइगोत्स्की (1896 – 1934) ने भी **संज्ञानात्मक विकास** का सिद्धांत ही दिया है। परंतु यह सिद्धांत संज्ञान के विकास में **सामाजिक अंतःक्रिया** के महत्व पर बल डालता है।
जहाँ पियाजे के अनुसार **विकास अधिगम से पहले** होता है, वहीं वाइगोत्स्की ने बताया कि विकास होने के लिए **उससे पहले सामाजिक अंतःक्रिया** होनी आवश्यक है।

सामाजिक अंतःक्रिया —(वाइगोत्स्की)→ विकास —(पियाजे)→ अधिगम

वाइगोत्स्की का सिद्धांत, पियाजे के सिद्धांत से निम्न प्रकार से भिन्न है -
1. वाइगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास के लिए **संस्कृति तथा सामाजिक कारकों** पर अधिक बल दिया है जो **पियाजे** की **सार्वभौमिक अवस्थाओं** के अनुरूप नहीं है।
2. वाइगोत्स्की ने संज्ञानात्मक विकास के लिए **भाषा के महत्व** पर जोर दिया है। **पियाजे** के अनुसार **भाषा** अपने विकास के लिए **विचारों पर आधारित** होती है (विचार भाषा से पहले उत्पन्न हो जाते हैं)। जबकि **वाइगोत्स्की** के अनुसार भाषा तथा विचार आरम्भ में दो अलग-अलग तंत्र होते हैं, जो लगभग **तीन वर्ष** की आयु में एक-दूसरे से मिलकर भाषायी विचार बना देते हैं।

3. वाइगोत्स्की के अनुसार संज्ञानात्मक विकास के लिए **व्यस्क** एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। व्यस्क अपनी **संस्कृति के उपकरण** बच्चों को सौंपते हैं। ये उपकरण एक संस्कृति से दूसरी संस्कृति में अलग-अलग होते हैं।

वाइगोत्स्की द्वारा दिये गये कुछ सम्प्रत्यय

कोई अन्य अधिक ज्ञान वाला (MKO)
वह अन्य व्यक्ति जिसे किसी विशेष कार्य, प्रक्रिया या अवधारणा के संबंध में शिक्षार्थी की अपेक्षा बेहतर समझ या

respect to a particular task, process, or concept. It may be a teacher, parents, an older adult or a peer group friend.

Zone of Proximal Development (ZPD)

Some tasks can be done by the child him/herself (According to Vygotsky – **Internalization**) and some with the help and guidance of others. Zone of Proximal Development (ZPD) is the **difference** between what a child can achieve independently and what a child can achieve with the guidance and help of a skilled partner.

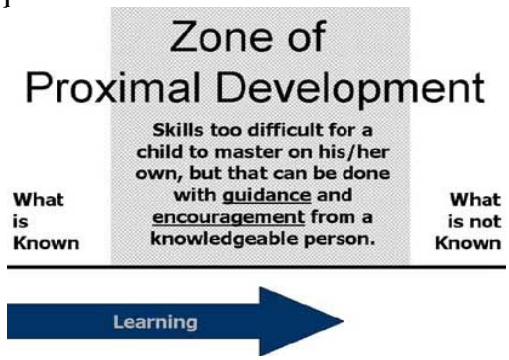

For example, the child could not solve the maze by him/herself but was able to solve it with the help of his/her father. For this type of particular help, Vygotsky gave a concept known as **Scaffolding**.

Scaffolding (Support) – It is the **Temporary External Support** given to the child during the process of learning. When a child solves a problem with the help and guidance of an adult or a friend (MKO), it is known as Scaffolding.

Vygotsky and Language

According to Vygotsky, the child uses language not only for social communication but also for executing self-directed behaviours, planning and giving directions to him/herself. Vygotsky believed that language develops from social interactions, for communication purposes. Vygotsky viewed language as man's greatest tool, a means for communicating with the outside as well as inside world.

उच्च स्तर की क्षमता हो। यह अध्यापक, माता-पिता, कोई व्यस्क या समूह का साथी हो सकता है।

समीपस्थ/संभावित विकास का क्षेत्र(ZPD)

कुछ काम बच्चे अपने आप कर सकते हैं, (वाइगोत्स्की के अनुसार **आत्मसात करना**) तथा कुछ कार्यों को करने में बडों या अधिक कुशल व्यक्ति की मदद की आवश्यक्ता पडती है। जो कार्य बच्चा खुद अपने बल पर प्राप्त कर सकता है तथा जो कार्य किसी अन्य अधिक कुशल व्यक्ति (MKO) की मदद से कर सकता है, समीपस्थ विकास का क्षेत्र (ZPD) इन दोनों के बीच का क्षेत्र है।

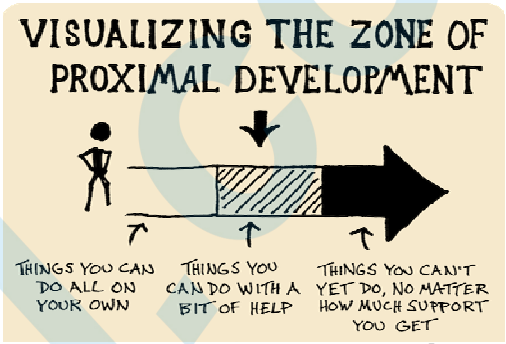

उदाहरण - कोई बच्चा किसी भूल-भूलैया को पहली बार स्वयं से हल नहीं कर सकता, परन्तु अपने पिता की सहायता से उसे हल कर लेता है। इस मदद को वाइगोत्सकी ने एक अन्य सम्प्रत्यय, **स्कॉफोल्डिंग,** से समझाया है -

स्कॉफोल्डिंग (ढाँचा निर्माण/सहयोग)- यह अधिगम के दौरान बच्चे को दिया गया **अस्थायी बाहरी सहयोग** होता है। जब बच्चा किसी समस्या का समाधान, किसी व्यस्क या साथी (MKO) के मार्गदर्शन के अनुसार कार्य करके करता है उसे स्कॉफहोल्डिंग कहते हैं।

वाइगोत्स्की तथा भाषा

वाइगोत्स्की के अनुसार बच्चे भाषा का प्रयोग न केवल सामाजिक सम्प्रेषण हेतु अपितु स्वतः निर्देशित कार्य करने के लिए, व्यवहार योजना बनाने तथा स्वयं को निर्देश देने के लिए भी करते हैं। वाइगोत्स्की मानते हैं कि भाषा का विकास अपने विचारों का आदान-प्रदान (सम्प्रेषण) करने के लिए, सामाजिक अंतःक्रिया से होता है। वाइगोत्स्की भाषा को मानव इतिहास का सबसे अधिक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखते हैं जिससे हम बाहरी तथा आंतरिक दुनिया के साथ संप्रेषण करते हैं।

Vygotsky explained three types of language - **Social Speech –** It is the **External Communication** which we used to talk to others. It starts usually at the age of two. **Inner Speech (Thinking) –** It is the **Covert** (hidden) **Speech** i.e. **Thinking Silently** in our mind. It usually starts at the age of three. **Private Speech** – It is the **Speech Addressed to the Self** for the purpose of **Self-Regulation** i.e. speaking externally to ourselves in a less audible voice. We start it usually at the age of seven. For Vygotsky, thought and language are initially two separate systems merging at around three years of age. At this point speech and thought become interdependent: thought becomes verbal, speech becomes representational.	**सामाजिक/बाह्य भाषा** - यह हमारी बाहरी आमतौर पर प्रयोग की जाने वाली भाषा होती है जिसके द्वारा हम बाहरी दुनिया के साथ सम्प्रेषण करते हैं। यह आमतौर पर दो वर्ष की आयु से आरंभ हो जाती है। **आंतरिक/मौन भाषा** - यह हमारे मन के अंदर चलने वाले विचार हैं जिन्हें हम किसी भाषा के माध्यम से सोचते हैं। यह आमतौर पर तीन वर्ष की आयु से प्रारंभ होती है। **निजी भाषा** - यह अपने आप को नियंत्रित करने के लिए खुद से (सामान्यतः कम आवाज में) बोलकर की गई बातचीत है। यह आमतौर पर सात वर्ष की आयु से प्रारंभ होती है। वाइगोत्स्की के अनुसार आरम्भ में भाषा तथा विचार दो अलग-अलग तंत्र होते हैं जो लगभग तीन वर्ष की आयु में एक होने लगते हैं। इस अवस्था में भाषा तथा विचार एक दूसरे पर आश्रित हो जाते हैं। हमारे मन में विचार भाषा के रूप में आने लगते हैं जिनका प्रदर्शन हम भाषा के माध्यम से करते हैं।

EdUBull.com

Theory of Moral Development नैतिक विकास का सिद्धांत

- **By Lawrence Kohlberg 1958**

Morality is **Controlling Freedom** according to rules and norms of the society.

In the beginning, the individual feels some sort of problems in controlling freedom but day by day he/she becomes habitual and takes pleasure in that behaviour.

The individual is being kept in a moral dilemma to know about morality. The individual takes the help of moral reasoning in the solution of moral dilemma.

Kohlberg was an American. He presented the moral dilemma in the form of **stories** before 72 boys, of Chicago, of the age group between 10 to 16 years. Boys answered as per their moral reasoning, on the basis of which Kohlberg made his theory.

One of the best-known stories narrated by Kohlberg concerns a man called Heinz who lived somewhere in Europe.

As per the story, Heinz's wife was dying from a particular type of cancer. Doctors said a new drug might save her. The drug had been discovered by a local chemist, and the Heinz tried desperately to buy some, but the chemist was charging ten times the money it cost to make the drug, and this was much more than the Heinz could afford.

Heinz could only raise half the money, even after help from family and friends. He explained to the chemist that his wife was dying and asked if he could have the drug cheaper or pay the rest of the money later.

The chemist refused, saying that he had discovered the drug and was going to make

समाज के नियम, आदर्श एवं मानक के अनुसार अपनी **स्वतंत्रता को नियंत्रित करना** ही नैतिकता कहलाता है।

प्रारंभ में व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता को नियंत्रित करने में कठिनाई उत्पन्न होती है किंतु धीरे-धीरे वह आशवस्त हो जाता है और उसे इसी काम में आनंद आने लगता है।

नैतिकता को जानने के लिये व्यक्ति को नैतिक दुविधा में रखा जाता है। नैतिक दुविधा से निकलने के लिए व्यक्ति नैतिक तर्क-वितर्क का सहारा लेता है।

Lawrence Kohlberg
1927 - 1987

कोहलबर्ग एक अमेरिकन थे जिन्होने अमेरिका के शिकागो शहर के 10 से 16 आयु वर्ग के 72 लड़कों के सामने **कहानी के माध्यम से** नैतिक दुविधा प्रस्तुत की। लड़कों ने अपने नैतिक तर्क के अनुसार उत्तर दिये, जिनके आधार पर इन्होनें अपना सिद्धांत प्रस्तुत किया।

इन कहानियों में से एक सुप्रसिद्ध कहानी, जिसे कोहलबर्ग ने बच्चों को सुनाया, यूरोप के रहने वाले हाइंज नामक व्यक्ति से संबंधित है।
कहानी के अनुसार, हाइंज की पत्नी एक विशेष प्रकार के कैंसर से मरने वाली थी। डॉक्टर ने बताया कि कोई नई दवा उसकी पत्नी की जान बचा सकती है। उस दवा को किसी स्थानीय कैमिस्ट ने बनाया है। हाइंज ने उस दवा को खरीदने के लिए बेतहाशा प्रयास किया परंतु कैमिस्ट उस दवा की लागत से दस गुणा कीमत लगा रहा था जो हाइंज की हैसियत से बहुत ज्यादा थे।

हाइंज अपने परिवार तथा दोस्तों की मदद से केवल आधे पैसे ही जुटा पाया। उसने कैमिस्ट को बताया कि उसकी पत्नी मरने वाली है तथा उससे प्रार्थना की कि उसे दवा कुछ सस्ते में दे दे या बाकि पैसे वो उससे बाद में ले ले।

money from it. The husband was desperate to save his wife, so later that night he broke into the chemist's and stole the drug.

Kohlberg asked a series of questions such as:

1. Should Heinz have stolen the drug?

2. Would it change anything if Heinz did not love his wife?

3. What if the person dying was a stranger, would it make any difference?

4. Should the police arrest the chemist for murder if the woman died?

On the basis of such type of stories and the answers given by the children, Kohlberg described that Moral Development of a child completes in **3 Levels and 6 Stages**. It is not necessary that everyone will achieve all the stages.

Level I. Pre – Conventional Level (Pre-Moral Level)

At this level, the **Motivation** and **Control** of the child are **both from Outside.**
No Knowledge of the order of Society

Stage 1 –
Punishment-Obedience Orientation:- Child thinks that avoiding punishment and obeying elders is moral.

Stage 2 –
Instrumental relativity orientation (Give & Take):- Child thinks that if we are getting/achieving something against any behaviour the behaviour is moral.

Level II. Conventional level

Motivation from inside.
Control from outside.
In this stage, the child talks about law and order.

Stage 3 –

परंतु कैमिस्ट ने यह कहते हुए कि, उसने दवा को खोजा है और इसी से उसे पैसे भी कमाने हैं, हाइंज को मना कर दिया। हाइंज अपनी पत्नी को बचाने के लिए व्याकुल था जिसके चलते उसी रात वह कैमिस्ट की दुकान में घुस गया और दवा को चुरा लिया।

कोहलबर्ग ने निम्नलिखित प्रकार के प्रश्न बच्चों से पूछे –
1. क्या हाइंज को दवा चुरानी चाहिए थी?

2. यदि हाइंज अपनी से प्रेम नहीं करता होता तो क्या इससे कुछ फर्क पड़ता?

3.यदि मरने वाला कोई अजनबी होता तो क्या इससे परिणाम में कुछ परिवर्तन होता?

4. यदि वह औरत मर जाती है, तो क्या पुलिस को हत्या के आरोप में कैमिस्ट को गिरफ्तार करना चाहिए?

इसी प्रकार की कहानियों तथा लड़कों के द्वारा दिए गए उत्तरों के आधार पर कोहलबर्ग ने बच्चों के नैतिक विकास के **3 स्तर एवं 6 अवस्थाओं** का वर्णन किया है। सभी व्यक्ति इन सभी चरणों को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

प्रथम स्तर - पूर्व-परम्परागत स्तर (पूर्व-नैतिक स्तर)

इस स्तर पर बालक की **अभिप्रेरणा तथा नियंत्रण दोनों ही बाह्य** होते हैं।
बालक को समाज के नियम का कोई ज्ञान नहीं।

पहली अवस्था-
दण्ड-आज्ञापालन-अभिमुखता :- बालक के अनुसार दण्ड से बचना तथा आज्ञा का पालन करना ही नैतिकता है।
For deep understanding visit our youtube channel **pavitracademy**

दूसरी अवस्था-
साधनात्मक सापेक्ष अभिमुखता :- बालक के अनुसार

Interpersonal orientation
(Good boy/Good girl)
Child's morality is based on behaving according to the wishes of elders.

Stage 4-
Authority maintaining orientation
Social rule is Supreme and we have to obey it at any cost/condition.

Level III. Post-Conventional Level (Post-Moral level)

Motivation from inside
Control from inside.
Abstract thinking is necessary for attaining 5th and 6th stages. Only 10 to 15% of the people achieve these stages.

Stage 5 –
Social Contract Orientation:- Child's moral answer is based on the opinion of the **majority**.
The Child thinks moral is that which is accepted by the majority.
If majority likes, socials rules may be changed.

Stage 6 –
Universal Ethical Principle Orientation – People at this stage have developed their own set of moral guidelines which may or may not fit the law. A very few people reach this stage.

Example- If a false statement saves a life of an innocent, then the false statement is 100 times truer than the true one.

Conclusion

According to Kohlberg child's moral development is based on his/her moral development **stages** rather than behaviour.
Criticism (by Carol Gilligan) – Kohlberg has presented his theory on the basis of boys' answers only, he doesn't take girls for theory while girls' morality has much difference form boys' morality, because of much freedom controlling ability in girls.

यदि किसी कार्य के बदले कुछ लाभ होता है तो कार्य नैतिक है।

द्वितीय स्तर - परम्परागत स्तर

अभिप्रेरणा आंतरिक तथा नियंत्रण बाह्य।

इस अवस्था में बच्चा नियम की बात करता है।

तीसरी अवस्था-
परस्पर एकरूप अभिमुखता (अच्छा/बुरा बच्चा) बच्चों की नैतिकता बडों की आशाओं के अनुरूप कार्य करने की होती है।
For deep understanding visit our youtube channel **pavitracademy**

चौथी अवस्था-
अधिकार संरक्षण अभिमुखता
समाज का नियम सबसे ऊपर है। इसे हर हाल में मानना ही पडेगा परिणाम चाहे कुछ भी हो।

तृतीय स्तर - उत्तर-नैतिक स्तर या उत्तर-परम्परागत स्तर

अभिप्रेरणा तथा नियंत्रण दोनों आंतरिक।
5वीं तथा छठी अवस्था को प्राप्त करने के लिऐ **अमूर्त चिंतन** का होना आवश्यक है। यह केवल 10 से 15% ही प्राप्त कर पाते हैं।

पांचवीं अवस्था-
सामाजिक सम्पर्क अभिमुखता - बच्चों का नैतिक निर्णय **बहुमत** पर आधारित होता है।
बच्चे उस कार्य को नैतिक मानते हैं जिसे अधिकतर लोग मानते हैं।
यदि अधिक लोगों की राय हो तो नियम को बदला भी जा सकता है।

छठी अवस्था -
सार्वभौमिक नैतिक सिद्धांत अभिमुखता :- इस अवस्था में व्यक्ति अपने ही स्वंय के नैतिक दिशा-निर्देश बना लेता है जो कानून के हिसाब से सही हो भी हो सकते हैं और गलत भी।

EduBull.com

Criticism by Rosen – As the subjects were aged between 10-16 and so they have never been married. How can they feel Hein's situation?

Other Criticisms –

- ✓ All situations were hypothetical, not real.
- ✓ This theory is based on Western Culture. He did not care about Indian or other cultures.
- ✓ In fact, only first 4 stages are accepted by all cultures.

Piaget's Theory of Moral Development

In 1932, Jean Piaget in his famous book, 'The Moral Judgement of the Child' explained that there are a fixed sequence and logical pattern in the Moral Judgements of the child. This development is based on the sequential changes, which are inter-related with the intellectual development of an individual.

According to Piaget, there are two stages of Moral Development –

1. Stage of Heteronomous Morality – It is also known as Stage of Moral Realism. Its time period is approximately from the age of 2 to 8 years. In this state, children are immersed in the authoritarian environment.

(Note: For understanding the characteristics of this stage, we can compare it with **Kohlberg's Pre-Conventional Level**)

2. Stage of Autonomous Morality – This stage starts at the age of 9 – 11. We can compare this stage with Kohlberg's Conventional and Post-Conventional Levels.

For deep understanding visit our youtube channel **pavitracademy**

उदाहरण–यदि एक झूठ किसी की जान बचाता है तो वह सौ सच के बराबर है।

निष्कर्ष

कोहलबर्ग के अनुसार बच्चों का नैतिक निर्णय उनकी अवस्था के अनुसार होता है कार्यों के आधार पर नहीं।

आलोचना (कैरोल गिलीगन)– यह सिद्धांत केवल लड़कों के आधार पर किया लड़कियों से प्रश्न नहीं पूछे। जबकि लड़कियों की नैतिकता लड़कों से अलग होती है। क्योंकि लड़कियां अपनी स्वतंत्रता को कहीं अधिक नियंत्रित कर लेती हैं।

रोजन के द्वारा आलोचना - अगर सारे ही बच्चे 10 से 16 वर्ष की आयु के थे तो उनमें से कोई भी शादीशुदा नहीं होगा। तब वे हाइंज की परिस्थिति को कैसे समझ सकते हैं?

अन्य आलोचनाएँ -

- ✓ सभी परिस्थितियाँ परिकल्पित थी ना कि वास्तविक।
- ✓ यह सिद्धांत पश्चिमी सभ्यता पर आधारित है। इसमें भारत या अन्य संस्कृतियों का ध्यान नहीं दिया गया।
- ✓ सभी सभ्यताओं में केवल प्रथम 4 चरणों को ही मान्यता दी गई है।

जीन पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धांत

जीन पियाजे ने 1932 में अपनी मशहूर पुस्तक ^The Moral Judgement of the Child' में बताया कि बच्चों के नैतिक निर्णय के विकास में एक निश्चित क्रम एवं तार्किक पैटर्न होता है। यह विकास क्रमिक परिवर्तन, जो बच्चों के बौद्धिक विकास से संबंधित होते हैं, पर आधारित होते हैं।

पियाजे के नैतिक विकास की दो अवस्थाएं होती हैं।

1. परायत्त नैतिकता की अवस्था

इसे नैतिक वास्तविकता की अवस्था भी कहा जाता है। यह

	लगभग 2&8 वर्ष तक की आयु तक रहती है। इस अवस्था में बच्चे सत्तावादी वातावरण में डूबे हुए होते हैं। (नोट :- इस अवस्था की विशेषताएं जानने के लिए हम इसकी तुलना हम **कोहलबर्ग की पूर्व परम्परागत अवस्था** से कर सकते हैं।) **2. स्वायत्त नैतिकता की अवस्था** यह अवस्था 9 से 11 वर्ष की आयु में प्रारंभ होती है। इसकी तुलना हम कोहलबर्ग की परम्परागत तथा उत्तर परम्परागत अवस्थाओं से कर सकते हैं।

EduBull.com